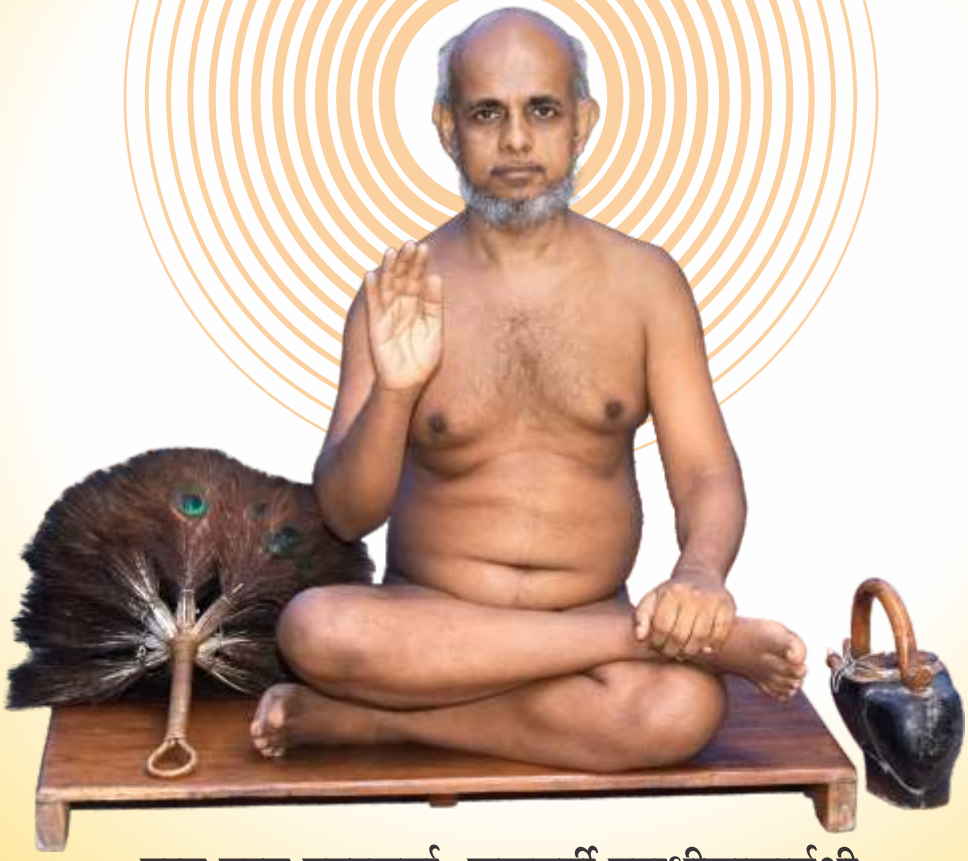

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

श्री महावीरस्वामी विधान

रचयित्री : पूज्या गणिनी आर्यिकाश्री ज्ञानमती माताजी

प्रकाशक:
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
हस्तिनापुर-मेरठ (उत्तरप्रदेश)

(परम्परानायक)

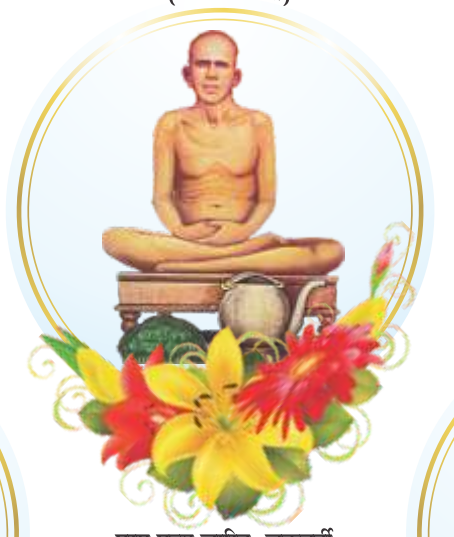

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं.472
ISBN-978-93-84003-83-8

श्री महावीर स्वामी विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी. लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी

मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ सानिध्य में भगवान महावीर के मोक्ष कल्याणक एवं दीपावली पर्व कार्तिक कृष्णा अमावस (11 नवम्बर 2015) के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com, rk195057@yahoo.com
Facebook : jaintirthjambudweep

COURTESY – JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण **वीर नि. सं. 2541, कार्तिक कृष्णा अमावस** **मूल्य**
1100 प्रतियाँ **11 नवम्बर 2015** **20/-रु.**

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने इस बीसवीं सदी में नारियों में सर्वप्रथम ग्रंथ लेखन का कार्य करके 400 ग्रंथों का लेखन करके साहित्य भंडार को समृद्ध करने में एक कीर्तिमान स्थापित किया है। अपने 62 वर्ष के दीक्षित जीवन में निरन्तर श्रुत की आराधना करने वाली पूज्य माताजी की लेखनी अभी भी रुकी नहीं है तथा 82 वर्ष की अवस्था में भी लेखन कार्य करके नित्य नयी कृतियाँ उनकी लेखनी से प्रसूत हो रही हैं, जिनमें विभिन्न स्तोत्र पाठ, स्वाध्याय के ग्रंथ एवं पूजा विधान आदि हैं। भक्ति मार्ग को प्रशस्त करने वाली पूजाओं में भी पूज्य माताजी उस अनुयोग संबंधी संपूर्ण विषयवस्तु को गागर में सागर की तरह समाहित करने में अत्यन्त निष्णात हैं। माताजी द्वारा रचित अनेक छोटे–बड़े विधानों को करके लोग भक्ति सरिता में अवगाहन करके आनंद की अनुभूति करते हैं।

श्रावकों के षट्कर्तव्य आचार्यों ने बताए हैं—

देवपूजा गुरुपास्तिः स्वाध्यायः संयमस्तपः।
दानं चेति गृहस्थाणां, षट्कर्माणि दिने दिने।।

अर्थात् देवपूजा, गुरुओं की उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप एवं दान गृहस्थों को प्रतिदिन करते रहना चाहिए जिससे उनका गृहस्थ धर्म सार्थक माना है।

वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के माध्यम से प्रकाशित करके नित्य नई कृतियाँ पाठकों तक पहुँचाने का सौभाग्य दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के पदाधिकारियों को प्राप्त होता है जो हमारे लिये गौरव की बात है। उसी क्रम में **'श्री महावीर स्वामी विधान'** की यह पुस्तक भी आप तक पहुँचायी जा रही है। इस विधान को करके भक्त भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर का भी दर्शन अवश्य करें एवं भगवान की भक्ति करके असीम पुण्य का संचय करें, यही मंगल भावना है। पूज्य माता जी दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें और आगे भी इसी तरह अपने ज्ञान से भक्तों को सिंचित करती रहें। वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि करे, यह जिनेन्द्र देव से मंगल प्रार्थना है।

प्रस्तावना

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जैनधर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी हुए हैं। भगवान महावीर स्वामी का जन्म कुण्डलपुर नगरी में हुआ। कुण्डलपुर में राजा सर्वारथ के पुत्र सिद्धार्थ के साथ वैशाली के राजा चेटक की पुत्री त्रिशला का विवाह हुआ। त्रिशला माता का दूसरा नाम प्रियकारिणी भी था। राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला माता के आंगन में 15 महीने तक लगातार रत्नवृष्टि हुई। यह नियम है कि तीर्थंकर का जन्म अपने माता-पिता के घर में ही होता है ननिहाल में नहीं। अतः भगवान महावीर की वास्तविक जन्मभूमि कुण्डलपुर ही है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से भगवान महावीर की जन्मभूमि का विकास हुआ है। वहाँ पर भगवान महावीर का मन्दिर, ऋषभदेव मन्दिर, नवग्रहशान्ति मन्दिर, त्रिकाल चौबीसी मन्दिर एवं भगवान महावीर के नंद्यावर्त महल का सुन्दर निर्माण हुआ है। कुण्डलपुर का कण-कण पवित्र है क्योंकि वहाँ पर भगवान के गर्भ, जन्म, तप तीन कल्याणक हुए हैं। भगवान को केवलज्ञान जृम्भिका ग्राम में हुआ और भगवान महावीर ने कार्तिक कृष्णा अमावस को पावापुरी से मोक्षधाम को प्राप्त किया।

पूज्य माताजी ने 24 तीर्थंकर के विधानों की श्रृंखला में यह **'श्री महावीर स्वामी विधान'** लिखकर प्रदान किया है। इस विधान में सर्वप्रथम मंगलाचरण है फिर अर्हंत पूजा है। अर्हंत पूजा के बाद सुन्दर तर्जों में श्री महावीर जिनपूजा है—

त्रिशलानंदन शतशत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलिकर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।

भगवान महावीर की पूजा के बाद पंचकल्याणक के अर्घ्य हैं। इसके बाद भगवान के 108 मंत्र के 108 अर्घ्य एवं 1 पूर्णार्घ्य है। पूर्णार्घ्य के बाद जाप्य मंत्र है फिर जयमाला है। जयमाला में भगवान के गुणों का वर्णन करते हुए पूज्य माताजी ने भगवान के समवसरण में गणधर, मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका की संख्या का सुन्दर वर्णन किया है–

श्री इन्द्रभूति आदिक ग्यारह, गणधर सातों ऋद्धीयुत थे।
चौदह हजार मुनि अवधि ज्ञानि, आदिक सब सात भेदयुत थे।।
चंदना प्रमुख छत्तीस सहस, संयतिकायें सुरनर नुत थीं।
श्रावक इक लाख श्राविकाएँ, त्रय लाख चतुःसंघ संख्या थी।।

जयमाला में स्वाध्याय का पूरा लाभ प्राप्त हो जाता है। भगवान महावीर की सात हाथ की ऊँचाई एवं 72 वर्ष की आयु थी। इस विधान के अंत में पूज्य माताजी ने लिखा है कि जो भव्य इस विधान को करते हैं वे इस पंचमकाल में रत्नत्रय रूपी निधि को प्राप्त कर स्वर्ग के सुखों को प्राप्त करते हैं और फिर परम्परा से एक दिन मोक्ष सुख को प्राप्त करते हैं। विधान की पूर्ति पर प्रशस्ति भी है।

प्रशस्ति के बाद मेरे द्वारा रचित कुण्डलपुर तीर्थ पूजा, भगवान श्री महावीर स्वामी की एवं कुण्डलपुर तीर्थ की आरती, भगवान महावीर चालीसा एवं भजन हैं।

इस प्रकार इस विधान में कुल तीन पूजा, 108, अर्घ्य 1 पूर्णार्घ्य एवं 3 जयमालायें हैं। यह विधान सभी के जीवन में सुख, शान्ति, समृद्धि को प्रदान कराये, यही मंगल भावना है। विधान रचयित्री पूज्य माताजी स्वस्थ रहें एवं दीर्घायु प्राप्त करें, जिनेन्द्रदेव से यही मंगल प्रार्थना है—

जियो युग युग हे माँ ज्ञानमती
हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं।
रहो स्वस्थ चिरायु मातु श्री,
हम यही भावना करते हैं।।
पहले खुद को तीर्थ बनाया, फिर तीर्थों की कीर्ति बढ़ाया।
त्वं जीव नन्द वर्धस्व माँ,
हम यही कामना करते हैं।। जियो.।।

दो शब्द

—आर्यिका सुव्रतमती

स्वदोष शान्त्यावहितात्मशांतिः शान्तेर्विधाता शरणं गतानाम्।
भूयाद् भवक्लेश भयोपशान्त्यैः शांतिर्जिनो मे भगवान्शरण्यः।।

भगवान महावीर के शासनकाल में बीसवीं इक्कीसवीं शताब्दी में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, आर्यिका शिरोमणि, वर्तमान में पीछीधारी सभी साधुओं में सबसे प्राचीन दीक्षित, दिव्यशक्ति परमपूज्य 105 गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना की है। प्रतिक्षण पूज्य माताजी की यह भावना रहती है कि किस तरह से मैं वर्तमान में सभी भव्य जीवों को आगम के ज्ञान से, पूर्वाचार्यों की वाणी से सिंचित करूँ।

आज के भौतिक युग में लोगों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए भगवान की भक्ति, पूजा विधान आदि सशक्त माध्यम है। जब लोग पूज्य माताजी द्वारा रचित विधानों की पंक्तियों को पढ़ते हैं तो वे भक्ति में भाव विभोर हो जाते हैं। भक्ति में उनके पैर थिरकने लग जाते हैं और वे भक्ति भाव से पूजा कर असंख्य कर्मों की निर्जरा कर लेते हैं। जब भगवान के दर्शनमात्र से पाप कर्म निर्जीण हो जाते हैं तो उनकी पूजा, भक्ति करने से तो विशेष पुण्य फल प्राप्त होता है।

धवला पु.-6 में आचार्य श्री वीरसेनस्वामी ने जिनबिम्ब दर्शन के महत्त्व का कितना सुन्दर वर्णन किया है-

दर्शनेन जिनेन्द्राणां पापसंघातकुंजरम्।
शतधा भेदमायाति गिरिर्वज्रहतो यथा।।

अर्थात् जिनेन्द्रों के दर्शन से पापसंघातरूपी कुंजर के सौ टुकड़े हो जाते हैं, जिस प्रकार कि वज्र के आघात से पर्वत के सौ टुकड़े हो जाते हैं।

देव, शास्त्र, गुरु की भक्ति, पूजा विशेष फल को देने वाली है। पूज्य माताजी की वाणी जिनवाणी है। लेखनी में सरस्वती का वास है। जिनागम का सार बताने वाली, ज्ञानामृत का वितरण करने वाली, षट्खण्डागम की 16 पुस्तकों पर 'सिद्धान्तचिन्तामणि' नाम की संस्कृत टीका लिखने वाली, राष्ट्रगौरव, युगनायिका, सिद्धान्तचक्रेश्वरी, वाग्देवी, डी. लिट्, दिव्यशक्ति आदि अनके उपाधियों से अलंकृत पूज्य माताजी इस युग के लिए वरदान हैं। इस विधान की प्रूफ रीडिंग के माध्यम से मुझे जो स्वाध्याय का लाभ प्राप्त हुआ है, वह मेरे भव भ्रमण को दूर का शीघ्र ही श्रुतज्ञान की प्राप्ति करावे, इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ पूज्य माताजी के पावन चरणों में कोटि-कोटि नमन।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि– आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति– अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र–** गोयल, **नाम–** कु. मैना

माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत– ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा– चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा– वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व– अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि– सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा– हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम, ग्वालियर में चिन्तामणि पार्श्वनाथ अतिशय क्षेत्र इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा– पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा– 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा– जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) आचार्य श्री शांतिसागर सम्मेदशिखर ज्योति रथ (2014) भगवान ऋषभदेव विश्वशांति कलश यात्रा-मांगीतुंगी (2015) के दो रथों का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	मंगलाचरण	1
2.	श्री अर्हंत पूजा	3
3.	श्री महावीर जिनपूजा	8
4.	अथ पंचकल्याणक अर्घ्य	11
5.	अथ 108 अर्घ्य	12
6.	जयमाला	26
7.	प्रशस्ति	28
8.	महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर तीर्थ पूजा	29
9.	भगवान श्री महावीर स्वामी की आरती	35
10.	कुण्डलपुर तीर्थ की आरती	36
11.	भगवान महावीर चालीसा	37
12.	भजन- नाम तिहारा	40
13.	भजन- वीर भज ले.....	41
14.	भजन-कुण्डलपुर धरती.....	42

मण्डल विधान का नक्शा

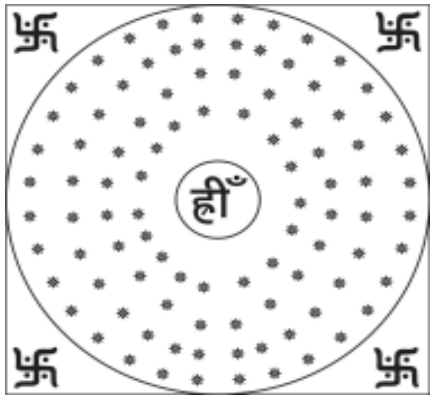

कुल पूजा-3, अर्घ्य 108, पूर्णार्घ्य-1, जयमाला-3।

श्री महावीर स्वामी विधान

मंगलाचरण

श्रियाभिवृद्धः खलु वर्धमानः
श्रीमुक्तिलक्ष्म्या भुवनाधिनाथः।
सर्वार्थसिद्ध्या कृतकृत्यसिद्धः
त्वां नौमि भो वीर! निजात्मसिद्ध्यै।।1।।

श्रीमान् वीरोऽतिवीरः त्रिभुवनमहितः सौख्यराशिर्जिनेन्द्रः।
यो जातः कुंडपुर्यां भविकमलरविः सोऽस्ति सिद्धार्थपुत्रः।।
आषाढे शुक्लषष्ठ्यां सुरनरविनुतो गर्भमायात् जनन्यां।
पित्रोः पूजां विदध्युः किल दिविजगणाः रत्नधारा ववर्षुः।।2।।

चैत्रे शुक्ले जिनेशः त्रययुतदशमे पावने जायतेस्म।
हृदयैः संगीतवाद्यैः सुरगिरिशिखरे सोऽभिशिक्तः सुराद्यैः।।
मार्गे कृष्णे दशम्यां व्रतगुणमणिभिर्भूषितो जातरूपः।
ध्याने लीनः कदाचित् समदभवकृतस्तूपसर्गस्य जेता।।3।।

राधे शुक्लादशम्यां ग्रसितकलितमाः उद्ययौ ज्ञानसूर्यः।
लोकालोकप्रकाशी ह्यनवधिकिरणैः ध्वस्तमोहांधकारः।।
कृष्णस्याद्ये दिने ते किल नभसि महावीर! दिव्यध्वनिः स्यात्।
त्वत्स्याद्वादामृतं भोः भवगदहरणं देव! अद्यावधीह।।4।।

ऊर्जे कृष्णे निशांते चतुरधिदशमे वासरे मुक्तिमाप्नोत्।
पावापुर्यां च वीरः सहजसुखमयः सप्तहस्तोच्छ्रितोऽसौ।।
कौमार्ये ध्वस्तमारः भुवि किल चरमस्तीर्थकृन्नाथवंशी।
स्वर्णाभो वर्धमानो हतदुरितरविः सिंहचिन्हेन ज्ञातः।।5।।

मातंगो यक्षदेवो जिनवचनरता सात्र सिद्धायिनी च।
ताभ्यां ते पादपद्मं विजितभव! सदा पूजितं विश्ववंद्यं।।
त्रैलोक्येशं जिनं त्वामहमपि सततं सन्मते! वीर! वंदे।
याचेऽहं तत्फलं भोः! जिनगुणभृत्संपदं देहि मह्यं।।6।।

–अनुष्टुप् छंद–

वर्षद्वासप्ततेरायुः , त्रिशलानंदनो जिनः।
भक्त्यानिशं स्तवीमि त्वां, ज्ञानमत्यै श्रियै त्वरं।।7।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पूजा नं. १

श्री अर्हंत पूजा

स्थापना–गीता छंद

अरिहंत प्रभु ने घातिया को घात निज सुख पा लिया।
छ्यालीस गुण के नाथ अठरह दोष का सब क्षय किया।।
शत इंद्र नित पूजें उन्हें गणधर मुनी वंदन करें।
हम भी प्रभो! तुम अर्चना के हेतु अभिनन्दन करें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–बसन्ततिलका छंद–

श्रीमज्जिनेंद्र पद में जलधार देऊं।
आतंक पंक जग का सब दूर होवे।।
इच्छानुसार फलदायक कल्पतरू ये।
पूजा जिनेन्द्रप्रभु की त्रय ताप नाशे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा। (जलं निर्वपामीति स्वाहा।)

काश्मीरि केशर सुचंदन को घिसाऊँ।
चर्चूं जिनेन्द्र पदपंकज में रुची से।।
संसार के सकल ताप विनाश करती।
पूजा जिनेन्द्र प्रभु की सब सौख्य देती।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमात्मकेभ्यः चंदनं ... ।

जो कुंदपुष्प कलियों सम दीखते हैं।
धोये सु तंदुल लिये भर थाल में हैं।।
अर्हंत सन्मुख रखूँ बहु पुंज नीके।
पाथेय मोक्षपथ में जन के लिये हो।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनादिनिधनेभ्यः अक्षतं ... ।

मल्ली गुलाब वर पुष्प सुगंधि करते।
अर्हंत के चरण में रुचि से चढ़ाऊँ।।
पापान्धकूप मधि डूब रहे जनों को।
उद्धार हेतु जिनपूजन ही जगत् में।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः सर्वनृसुरासुरपूजितेभ्यः पुष्पं ... ।

शालीय ओदन सुगंधित भोज्यवस्तू।
पीयूष तुल्य चरु लेकर थाल भरके।।
अर्हंत सन्मुख चढ़ा क्षुध व्याधि नाशूँ।
तृप्ती अनंत जिनपूजन से मिलेगी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतज्ञानेभ्यः नैवेद्यं ... ।

जो चित्त का तमसमूह विनाश करके।
त्रैलोक्यगेह वर दीपक दीप ज्योति।।
ले दीप आरति करूँ वरज्ञानज्योति।
पाऊँ अनंत निजज्ञान विकास करके।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतदर्शनेभ्यः दीपं ... ।

जो धूप सुन्दर सुगंध बिखेरती है।
अग्नी विषे जलत धूम्र उड़ावती है।।
खेऊँ दशांगवर धूप जिनेन्द्र आगे।
संपूर्ण पाप जलते वर सौख्य होगा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतवीर्येभ्यः धूपं ... ।

ये कल्पवृक्ष फल सम अति मिष्ट ताजे।
अमृत समान रस से परिपूर्ण दीखें।।
पूजा करूँ फल चढ़ाकर आपकी मैं।
स्वात्मैक सिद्धि फल प्राप्त करूँ इसी से।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतसौख्येभ्यः फलं ... ।

नीरादि आठ वर द्रव्य संजोय करके।
घंटा ध्वजा चंवर छत्र सुदर्पणादी।।

मांगल्य द्रव्य शुभ लेकर पूजते ही।
संपूर्ण मंगल मिले निज सौख्य पाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परममंगलेभ्यः अर्घ्यं ... ।

श्रीपूज्यपाद जिन के चरणाब्ज नमते।
संपूर्ण इंद्र शिर से अतिभक्ति भावे।।
श्री पूज्य के पदनिकट जलधार देते।
हो शांति लोक त्रय में मुझ भक्त को भी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः स्वस्ति भद्रं भवतु जगतां शांतये शांतिधारां निष्पादयामि शांतिकृद्भ्यः स्वाहा।

(शांतिधारा करें)

जो इन्द्र भक्ति वश नेत्र हजार करके।
बाहू हजार कर तांडव नृत्य करता।।
ऐसे जिनेन्द्रपद पुष्प चढ़ाय करके।
पूजा त्रिकाल कर अनुपम सौख्य पाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः ध्यातृभिः अभीप्सितफलेभ्यः स्वाहा।

(पुष्पांजलि चढ़ावें)

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

श्री अरिहंत जिनेन्द्र का, धरूँ हृदय में ध्यान।
गाऊँ गुणमणिमालिका, हरूँ सकल अपध्यान।।1।।

–शम्भु छंद–

जय जय प्रभु तीर्थंकर जिनवर, तुम समवसरण में राज रहे।
जय जय अर्हंत् लक्ष्मी पाकर, निज आत्मा में ही आप रहे।।
जन्मत ही दश अतिशय होते, तन में न पसेव न मल आदी।
पयसम सित रुधिर सु समचतुष्क, संस्थान संहनन है आदी।।1।।

अतिशय सुरूप, सुरभित तनु हैं, शुभ लक्षण सहस आठ सोहें।
अतुलित बल प्रियहित वचन प्रभो, ये दश अतिशय जन मन मोहें।।
केवल रवि प्रगटित होते ही, दश अतिशय अद्भुत ही मानों।
चारों दिश इक-इक योजन तक, सुभिक्ष रहे यह सरधानो।।2।।

हो गगन गमन, नहिं प्राणीवध, नहिं भोजन नहिं उपसर्ग तुम्हें।
चउमुख दीखें सब विद्यापति, नहिं छाया नहिं टिमकार तुम्हें।।
नहिं नख औ केश बढ़े प्रभु के, ये दश अतिशय सुखकारी हैं।
सुरकृत चौदह अतिशय मनहर, जो भव्यों को हितकारी हैं।।3।।

सर्वार्ध मागधीया भाषा, सब प्राणी मैत्री भाव धरें।
सब ऋतु के फल औ फूल खिलें, दर्पणवत् भूरत्नाभ धरें।।
अनुकूल सुगंधित पवन चले, सब जन मन परमानंद भरें।
रजकंटक विरहित भूमि स्वच्छ, गंधोदक वृष्टी देव करें।।4।।

प्रभु पद तल कमल खिलें सुन्दर, शाली आदिक बहु धान्य फलें।
निर्मल आकाश दिशा निर्मल, सुरगण मिल जय जयकार करें।।
अरिहंत देव का श्रीविहार, वर धर्मचक्र चलता आगे।
वसु मंगल द्रव्य रहें आगे, यह विभव मिला जग के त्यागे।।5।।

तरुवर अशोक सुरपुष्प वृष्टि, दिव्यध्वनि, चौंसठ चमर कहें।
सिंहासन भामंडल सुरकृत, दुंदुभि छत्रत्रय शोभ रहें।।
ये प्रातिहार्य हैं आठ कहे, औ दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज।
ये चार अनंत चतुष्टय हैं, सब मिलकर छ्यालिस गुण कीरत।।6।।

क्षुध तृषा जन्म मरणादि दोष, अठदश विरहित निर्दोष हुए।
चउ घाति घात नवलब्धि पाय, सर्वज्ञ प्रभू सुखपोष हुए।।
द्वादशगण के भवि असंख्यात, तुम धुनि सुन हर्षित होते हैं।
सम्यक्त्व सलिल को पाकर के, भव भव के कलिमल धोते हैं।।7।।

मैं भी भवदुःख से घबड़ा कर, अब आप शरण में आया हूँ।
सम्यक्त्व रतन नहिं लुट जावे, बस यही प्रार्थना लाया हूँ।।
संयम की हो पूर्ती भगवन्! औ मरण समाधी पूर्वक हो।
हो केवल 'ज्ञानमती' सिद्धी, जो सर्व गुणों की पूरक हो।।8।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यः जयमाला महार्घ्यं....।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–दोहा –

मोह अरी को हन हुए, त्रिभुवन पूजा योग्य।
नमो नमो अरिहंत को, पाऊँ सौख्य मनोज्ञ।।1।।

।। इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. २

श्री महावीर जिनपूजा

(तर्ज-तुमसे लागी लगन.....)

आपके श्रीचरण, हम करें नित नमन, शरण दीजे।
नाथ! मुझपे कृपा दृष्टि कीजे।।टेक.।।
वीर सन्मति महावीर भगवन् !
बालयति हे अतिवीर! श्रीमन्!
आप पूजा करें, शुद्ध समकित धरें, शक्ति दीजे।
नाथ! मुझपे कृपा दृष्टि कीजे।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक –

(तर्ज-चंदन सा बदन.....)

–शंभु छंद –

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
गंगानदि का शुचि जल लेकर, तुम चरण चढ़ाने आये हैं।
भव भव का कलिमल धोने को,श्रद्धा से अति हरषाये हैं।।
हे वीरप्रभो! महावीर प्रभो! त्रयधारा दें तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।

हरिचंदन कुंकुम गंध लिये, जिनचरण चढ़ाने आये हैं।
मोहारिताप संतप्त हृदय, प्रभु शीतल करने आये हैं।।
हे वीरप्रभो! चंदन लेकर, चर्चन करते तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
क्षीराम्बुधि फेन सदृश उज्ज्वल, अक्षत धोकर ले आये हैं।
क्षय विरहित अक्षय सुख हेतू, प्रभु पुंज चढ़ाने आये हैं।
हे वीरप्रभो! हम पुंज चढ़ा, अर्चन करते तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
बेला चंपक अरविंद कुमुद, सुरभित पुष्पों को लाये हैं।
मदनारिजयी तव चरणों में, हम अर्पण करने आये हैं।।
हे वीरप्रभो! पुष्पों को ले, पूजा करते तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
पूरणपोली खाजा गूझा, मोदक आदिक बहु लाये हैं।
निज आतम अनुभव अमृत हित, नैवेद्य चढ़ाने आये हैं।
हे वीरप्रभो! चरु अर्पण कर, हम नमन करें तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
मणिमय दीपक में ज्योति जले, सब अंधकार क्षण में नाशे।
दीपक से पूजा करते ही, सज्ज्ञानज्योति निज में भासे।।
हे वीरप्रभो! तुम आरति कर, हम नमन करें तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकराय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
दशगंध विमिश्रित धूप सुरभि, धूपायन में खेते क्षण ही।
कटु कर्म दहन हो जाते हैं, मिलता समरस सुख तत्क्षण ही।।
हे वीर प्रभो! हम धूप जला, अर्चन करते तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
एला केला अंगूरों के, गुच्छे अति सरस मधुर लाये।
परमानंदामृत चखने हित, फल से पूजन कर हर्षाये।।
हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो! हम नमन करें तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल लाये हैं।
निजगुण अनंत की प्राप्ति हेतु, प्रभु अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।
"सज्ज्ञानमती" सिद्धी देकर, हम नमन करें तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.....।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–उपेंद्रवज्रा छंद –

त्रैलोक्य शांती कर शांतिधारा, श्री सन्मती के पदकंज धारा।
निज स्वांत शांतीहित शांतिधारा, करते मिले है भवदधि किनारा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरकल्पतरु के वर पुष्प लाऊँ, पुष्पांजलि कर निज सौख्य पाऊँ।
संपूर्ण व्याधी भय को भगाऊँ, शोकादि हर के सब सिद्धि पाऊँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ पंचकल्याणक अर्घ्य

–गीता छंद –

सिद्धार्थ नृप कुण्डलपुरी में, राज्य संचालन करें।
त्रिशला महारानी प्रिया सह, पुण्य संपादन करें।।
आषाढ़ शुक्ला छठ तिथी, प्रभु गर्भ मंगल सुर करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, हर विघ्न सब मंगल भरें।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठ्यां श्रीमहावीरतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित चैत्र तेरस के प्रभू, अवतीर्ण भूतल पर हुए।
घंटादि बाजे बज उठे, सुरपति मुकुट भी झुक गये।।
सुरशैल पर प्रभु जन्म उत्सव, हेतु सुरगण चल पड़े।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, निजकर्म धूली झड़ पड़े।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां श्रीमहावीरतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर वदी दशमी तिथी, भवभोग से निःस्पृह हुए।
लौकांतिकादी आनकर, संस्तुति करें प्रमुदित हुए।।
सुरपति प्रभू की निष्क्रमण, विधि में महा उत्सव करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, संसार सागर से तरें।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णादशम्यां श्रीमहावीरतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने प्रथम आहार राजा, कूल के घर में लिया।
वैशाख सुदि दशमी तिथी, केवलरमा परिणय किया।।
श्रावण वदी एकम तिथी, गौतम मुनी गणधर बनें।
तब दिव्यध्वनि प्रभु की खिरी, हम पूजते हर्षित तुम्हें।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां श्रीमहावीरतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक अमावस पुण्य तिथि, प्रत्यूष बेला में प्रभो।
पावापुरी उद्यान सरवर, बीच में तिष्ठे विभो।।
निर्वाणलक्ष्मी वरण कर, लोकाग्र में जाके बसे।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, तुम पास में आके बसें।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा-अमावस्यायां श्रीमहावीरतीर्थंकरनिर्वाणकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

महावीर सन्मति प्रभो! शिवसुखफल दातार।
पूर्ण अर्घ्य अर्पण करूँ, नमूँ अनंतों बार।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ 108 अर्घ्य

–दोहा–

महावीर प्रभु बालयति, नमूं नमूं शत बार।
पुष्पांजलि से पूजते, पाऊं सौख्य अपार।।1।।

।।अथ मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

'श्रीवृक्षलक्षण' प्रभो! तरु अशोक से सिद्ध।
शोक हरण हे वीर जिन! नमत मिले नव निद्धि।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षलक्षणाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत लक्ष्मी से तुम्हीं, आलिंगित हो 'श्लक्षण'।
गुण अनंत मेरे सभी, मिलते नाथ! प्रसन्न।।2।।
ॐ ह्रीं श्लक्षणाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ महा व्याकरण में, साधु कुशल लक्षण्य।
वाङ्मय विद्या प्राप्त हो, नमत जन्म हो धन्य।।3।।
ॐ ह्रीं लक्षण्याय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक हजार सुआठ हैं, लक्षण श्रुत में मान्य।
'शुभलक्षण' इनसे सहित, नमत मिले गुण साम्य।।4।।
ॐ ह्रीं शुभलक्षणाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय सुख अरु ज्ञान से, रहित 'निरक्ष' जिनेश।
सौख्य अतीन्द्रिय हेतु मैं, नमत हरूँ भव क्लेश।।5।।
ॐ ह्रीं निरक्षाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल सदृश वर नेत्र हैं, अतः 'पुण्डरीकाक्ष'।
पूजत मन पंकज खिले, वीर! भक्ति है साक्षि।।6।।
ॐ ह्रीं पुण्डरीकाक्षाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वात्म गुणों की पुष्टि से, 'पुष्कल' पूर्ण महान्।
नमत मिले सुख वीर जिन, भक्त बनें भगवान्।।7।।
ॐ ह्रीं पुष्कलाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खिले सुरोरुह नेत्र हैं, करिये दृष्टि प्रसन्न।
नमूँ 'पुष्करेक्षण' तुम्हें, मुझ मन होय प्रसन्न।।8।।
ॐ ह्रीं पुष्करेक्षणाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वात्मा की उपलब्धि हो, तुम भक्ती से नाथ!।
वंदूं 'सिद्धिद' वीर को, भव भव में हो नाथ।।9।।
ॐ ह्रीं सिद्धिदाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धोऽहं संकल्प से, तुम्हीं 'सिद्धसंकल्प'।
तुम अर्चा से दूर हों, सब संकल्प विकल्प।।10।।
ॐ ह्रीं सिद्धसंकल्पाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्धात्मा' भगवान को, नमते जो त्रयकाल।
स्वयं सिद्ध बन वे पुरुष, बनते जग प्रतिपाल।।11।।
ॐ ह्रीं सिद्धात्मने श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सिद्धसाधन' प्रभो! भव्य मुक्ति के हेतु।
निश्चय रत्नत्रय निमित, मिलें आप भवसेतु।।12।।
ॐ ह्रीं सिद्धसाधनाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बुद्धबोध्य' भगवंत तुम नमूँ नमूँ धर प्रीति।
ज्ञान जानने योग्य ही, प्राप्त किया जग मीत।।13।।
ॐ ह्रीं बुद्धबोध्याय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाबोधि' वैराग्य है, अरु रत्नत्रय प्राप्ति।
अति दुर्लभ इस विश्व में, नमत मुझे हो प्राप्ति।।14।।
ॐ ह्रीं महाबोधये श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वर्धमान' विज्ञान से, वृद्धिंगत भगवंत।
ज्ञानपूर्ण मेरा करो, नमूँ तुम्हें शिवकांत।।15।।
ॐ ह्रीं वर्धमानाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय ऋद्धि समेत प्रभु, नाम 'महर्द्धिक' सिद्ध।
सर्व ऋद्धि सिद्धी मिले, यश भी जगत प्रसिद्ध।।16।।
ॐ ह्रीं महर्द्धिकाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षा कल्प व व्याकरण, निरुक्त ज्योतिष छन्द।
वेद अंगमय को नमूँ, शिव उपाय 'वेदांग'।।17।।
ॐ ह्रीं वेदांगाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा पृथक् शरीर से, यही भेद विज्ञान।
नमूँ 'वेदवित्' आपसे, मिले मुझे सज्ज्ञान।।18।।
ॐ ह्रीं वेदविदे श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'वेद्य' मुनिगम्य तुम, केवलज्ञान धरंत।
स्वसंवेद्य अनुभव मिले, नमूँ वीर भगवंत।।19।।
ॐ ह्रीं वेद्याय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जातरूप' जिनदेव तुम, निर्विकार निर्ग्रंथ।
नग्न दिगम्बर वेषयुत, नमत मिले शिवपंथ।।20।।
ॐ ह्रीं जातरूपाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ ज्ञानी विद्वन् मुनी, उनमें श्रेष्ठ जिनेंद्र।
नाम 'विदांवर' मैं नमूँ, मिले ध्यान का केन्द्र।।21।
ॐ ह्रीं विदांवराय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वेदवेद्य' प्रभु आप ही, द्वादशांग के ईश।
पूर्ण ज्ञान दीजे मुझे, नमूँ नमाकर शीश।।22।।
ॐ ह्रीं वेदवेद्याय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मा से ज्ञेय तुम, 'स्वसंवेद्य' भगवान्।
निज समरस सुख हेतु मैं, नमूँ नमूँ गुणखान।।23।।
ॐ ह्रीं स्वसंवेद्याय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेद चार तुमसे हुये, अरु विशिष्ट ज्ञानैक।
नमूँ 'विवेद' जिनेन्द्र को, पाऊँ निज सुख एक।।24।।
ॐ ह्रीं विवेदाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तार्किकजन में श्रेष्ठ तुम, 'वदताम्वर' जिनराज।
न्याय तर्क विद्या निपुण, बनूँ सरें सब काज।।25।।
ॐ ह्रीं वदताम्वराय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'अनादी निधन' हो, जन्म मरण से शून्य।
श्री अनंत शाश्वत धरो, नमत बनूँ दुख शून्य।।26।।
ॐ ह्रीं अनादिनिधनाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्थ प्रगट करते प्रभो! केवलज्ञान से आप।
'व्यक्त' नाम तुमको नमूँ, दूर करूँ यम ताप।।27।।
ॐ ह्रीं व्यक्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अठरह महभाषा लघू, सात शतक सुस्पष्ट।
दिव्यध्वनी खिरती नमूँ, 'व्यक्तवाक्' तुम इष्ट।।28।।
ॐ ह्रीं व्यक्तवाचे श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमूँ 'व्यक्तशासन' विमल, मत विरोध से हीन।
सब प्रमाण से प्रगट है, इससे हो दुख क्षीण।।29।।
ॐ ह्रीं व्यक्तशासनाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'युगादिकृत' आपने, धर्मसृष्टि उपदेश।
जग को संरक्षण दिया, नमत न हो दुख लेश।।30।।
ॐ ह्रीं युगादिकृते श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण कृष्णा प्रतिपदा, दिव्यध्वनि के नाथ।
'युगाधार' तुमको नमूँ, धर्मतीर्थ से सार्थ।।31।।
ॐ ह्रीं युगाधाराय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगादि' कृतयुग का प्रथम, धर्म वही उपदेश।
शिवपथ दिखलाया अभी, सिद्ध नमूँ सुख हेतु।।32।।
ॐ ह्रीं युगादये श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगदादिज' जग में प्रभो! तीर्थंकर अवतार।
मोक्षमार्ग के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।।33।।
ॐ ह्रीं जगदादिजाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय स्वामी इन्द्र से, बढ़कर आप 'अतीन्द्र'।
शत इन्द्रों से वंद्य प्रभु, नमत बनूँ ज्ञानीन्द्र।।34।।
ॐ ह्रीं अतीन्द्राय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय ज्ञान व सुख रहित, आप 'अतीन्द्रिय' नाम।
स्वात्म अतीन्द्रिय सौख्य हित, कोटि कोटि प्रणाम।।35।
ॐ ह्रीं अतीन्द्रियाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धीन्द्र' सुकेवलज्ञान से, परमात्मा अभिराम।
नमूँ भक्ति से शीघ्र मुझ, मिले स्वात्म विश्राम।।36।।
ॐ ह्रीं धीन्द्राय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमैश्वर्य समेत प्रभु, नाम 'महेन्द्र' धरंत।
पूजूँ श्रद्धा से तुम्हें, अनुपम सुख विलसंत।।37।।
ॐ ह्रीं महेन्द्राय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म अंतरित दूर की, वस्तु अतीन्द्रिय सर्व।
'अतीन्द्रियार्थदृक्' देखते, नमत मिले गुण सर्व।।38।।

ॐ ह्रीं अतीन्द्रियार्थदृशे श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांचों इन्द्रिय से रहित, आप 'अनिन्द्रिय' मान।
अशरीरी महावीर को, नमत मिले सुख साम्य।।39।।

ॐ ह्रीं अनिन्द्रियाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहमिंद्रों से पूज्य हो, 'अहमिन्द्रार्च्य' जिनेश।
स्वात्म सौख्य संपति मिले, शीघ्र मिटे भव क्लेश।।40।।

ॐ ह्रीं अहमिन्द्राच्यार्य श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बत्तिस इन्द्रों से महित, नाम 'महेन्द्रमहीत'।
मैं भी पूजूँ प्रीतिधर, मिले स्वात्म नवनीत।।41।।

ॐ ह्रीं महेन्द्रमहिताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पूजा के योग्य तुम, जग में श्रेष्ठ 'महान्'।
महाव्रतों की प्राप्ति हो, अतः नमूँ भगवान्।।42।।

ॐ ह्रीं महते श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'उद्भव' भव उत्कृष्ट तुम, या जग में उत्कृष्ट।
पूजन से सब भक्त के, मिट जाते सब कष्ट।।43।।

ॐ ह्रीं उद्भवाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मसृष्टि के बीज हो, 'कारण' नाम धरंत।
धर्मनिधी मुझको मिले, आतम सुख विलसंत।।44।।

ॐ ह्रीं कारणाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथे काल के अंत में, उपदेशा षट्कर्म।
'कर्ता' कहलाये प्रभो! नमत मिटे भव भर्म।।45।।

ॐ ह्रीं कर्त्रे श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमहा संसार से, पार हुये भगवंत।
'पारग' तुमको मुनि कहें, तारो मुझे तुरंत।।46।।

ॐ ह्रीं पारगाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्गती भव दुःख से, तारक नाव समान।
'भवतारक' की शरण ले, तिरते भव्य प्रधान।।47।।

ॐ ह्रीं भवतारकाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत का पार नहिं, पा सकते गणईश।
नमूँ 'अगाह्य' प्रभो तुम्हें, नित्य नमाकर शीश।।48।।

ॐ ह्रीं अगाह्याय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगीजन से भी 'गहन', आप अलक्ष्यस्वरूप।
स्वात्म गुणों के हित नमूँ, प्राप्त करूँ निज रूप।।49।।

ॐ ह्रीं गहनाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगगम्य योगीश के, 'गुह्य' आपका नाम।
मुक्ति रहस्य मिले मुझे, नमूँ नमूँ शिवधाम।।50।।

ॐ ह्रीं गुह्याय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–रमणी छंद–

भगवन्! 'पराघ्र्य' सुख ऋद्धि धरा।
मुझको सुख दो, कर जोड़ नमूँ।।51।।

ॐ ह्रीं पराघ्र्याय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमेश्वर' हो, शिव श्रीपति हो।
नमते मुझको, परमामृत दो।।52।।

ॐ ह्रीं परमेश्वराय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'अनंतर्द्धी' जग में।
मुझमें अनंत गुण ऋद्धि भरो।।53।।

ॐ ह्रीं अनंतर्द्धये श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं माप 'अमेयर्द्धी' गुण तुम।
सुख ज्ञान भरो, मुझमें जजहूँ।।54।।

ॐ ह्रीं अमेयर्द्धये श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'अचिन्त्यर्द्धी' नत मैं।
नहिं चिंतन कर सकते मुनि भी।।55।।

ॐ ह्रीं अचिन्त्यर्द्धये श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रणमूं 'समग्रधी' केवल धी।
जजते मिलती, निज सौख्य निधी।।56।।

ॐ ह्रीं समग्रधिये श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्राग्र्य' नमूँ, जग मुख्य तुम्हीं।
मुझ जन्म जरा, मरणादि हरो।।57।।

ॐ ह्रीं प्राग्र्याय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्राग्रहरा', सब मंगल कृत।
नमते मुझको, निज संपति दो।।58।।

ॐ ह्रीं प्राग्रहराय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभ्यग्र' तुम्हीं, शिव सन्मुख हो।
त्रयलोक उपरि, निवसो प्रणमूँ।।59।।

ॐ ह्रीं अभ्यग्राय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रत्यग्र' विलक्षण हो जग में।
नत हूँ नित मैं, चरणांबुज में।।60।।

ॐ ह्रीं प्रत्यग्राय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब में प्रमुखा, प्रभु 'अग्र्य' तुम्हीं।
तुमको जजते, शत इन्द्र सदा।।61।।

ॐ ह्रीं अग्र्याय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब में अग्रेसर 'अग्रिम' हो।
प्रभु अंत समाधी, दो मुझको।।62।।

ॐ ह्रीं अग्रिमाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–उपजाति छंद–

हो ज्येष्ठ सबमें, 'अग्रज' कहाते।
त्रैलोक्य में नाथ, तुम्हीं बड़े हो।।
पूजूँ तुम्हें नाम सुमंत्र गाऊँ।
स्वात्मैक सिद्धी प्रभु शीघ्र पाऊँ।।63।।

ॐ ह्रीं अग्रजाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महातपा' घोर सुतप किया है।
बारह तपों को मुझको भि देवो।।पूजूँ.।।64।।

ॐ ह्रीं महातपसे श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेजोमयी पुण्य प्रभो! धरे हो।
'महासुतेजा' तुम तेज फैला।।पूजूँ.।।65।।

ॐ ह्रीं महातेजसे श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महोदर्क' तुम्हें कहे हैं।
महान तप का फल श्रेष्ठ पाया।।पूजूँ.।।66।।

ॐ ह्रीं महोदर्काय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐश्वर्य भारी प्रभु आपका है।
अतः 'महोदय' जग में तुम्हीं हो।।पूजूँ.।।67।।

ॐ ह्रीं महोदयाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कीर्ती चहूँदिश प्रभु की सुफैली।
'महायशा' नाम कहा इसी से।।पूजूँ.।।68।।

ॐ ह्रीं महायशसे श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महाधाम' तुम्हीं कहाते।
विशाल ज्ञानी सुप्रताप धारी।।पूजूँ.।।69।।

ॐ ह्रीं महाधाम्ने श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महासत्त्व' अपार शक्ती।
हे नाथ! मुझको निज शक्ति देवो।।पूजूँ.।।70।।

ॐ ह्रीं महासत्त्वाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाधृती' धैर्य असीम धारी।
आपत्ति में धैर्य रहे मुझे भी।।पूजूँ.।।71।।

ॐ ह्रीं महाधृतये श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महाधैर्य' त्रिलोक में भी।
महान तेजोबल वीर्यशाली।।पूजूँ.।।72।।

ॐ ह्रीं महाधैर्याय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महावीर्य' अनंतशक्ती।
महान तेजोबल वीर्यशाली।।पूजूँ.।।73।।

ॐ ह्रीं महावीर्याय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महासंपत्' सर्वसंपत्।
समोसरण में तुम पास शोभे।।पूजूँ.।।74।।

ॐ ह्रीं महासंपदे श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो!'महाबल' तनु शक्ति भारी।
ऐसी जगत् में नहिं अन्य के हो।।पूजँ.।।75।।

ॐ ह्रीं महाबलाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–प्रमाणिक छंद–

'महानशक्ति' धारते, त्रिलोक के गुरू तुम्हीं।
नमूँ अनंत शक्ति हेतु, आपको सदा यहीं।।76।।

ॐ ह्रीं महाशक्तये श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महान ज्योति' नाथ हो, अनंत ज्ञान रूप हो।
सुज्ञान ज्योति दीजिये, जजूँ तुम्हें सुप्रीति से।।77।।

ॐ ह्रीं महाज्योतिषे श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाविभूति तीन लोक की अनंत संपदा।
तथापि हो अधर तुम्हीं, नमूँ निजात्म सौख्य दो।।78।।

ॐ ह्रीं महाविभूतये श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाद्युती' असंख्य रत्नकांति से भि कांत हो।
जजूँ तुम्हें स्वकांति से मुझे प्रकाश दीजिये।।79।।

ॐ ह्रीं महाद्युतये श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामती' महान पूर्ण बुद्धि से त्रिलोक को।
जिनेन्द्र! एक साथ आप जानते नमूँ तुम्हें।।80।।

ॐ ह्रीं महामतये श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाननीति' न्याय आप सर्व भव्य का करें।
समस्त दुष्ट कर्म से छुड़ाइये जजूँ तुम्हें।।81।।

ॐ ह्रीं महानीतये श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महान क्षांति' शत्रु पे क्षमा किया क्षमामयी।
मुझे भि शक्ति दीजिये क्षमास्वरूप मैं बनूँ।।82।।

ॐ ह्रीं महाक्षांतये श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महादयो' समस्त जीव पे दया किया तुम्हीं।
दया करूँ निजात्म पे यही कृपा करो नमूँ।।83।।

ॐ ह्रीं महादयाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महानप्राज्ञ' नाथ केवली अनंतज्ञान से।
सुभेदज्ञान दीजिये तिरूँ भवोदधी अबे।।84।।

ॐ ह्रीं महाप्राज्ञाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महान भाग' सर्व सौख्य पूर्ण हो त्रिलोक में।
सुरेन्द्र पूजते तुम्हें नमंत श्रेष्ठ भाग्य हो।।85।।

ॐ ह्रीं महाभागाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाअनंद' स्वात्मजन्य सौख्य में निमग्न हो।
मुझे निजात्म सौख्य दीजिये नमूँ नमूँ तुम्हें।।86।।

ॐ ह्रीं महानन्दाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकवी' समस्त सौख्यदायि आपके वचन।
नमूँ कृपा करो सुवाक्य सिद्धि प्राप्त हो मुझे।।87।।

ॐ ह्रीं महाकवये श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामहान्' देव इंद्र आप अर्चना करें।
महान तेज धारते नमूँ सुज्ञान तेज दो।।88।।

ॐ ह्रीं महामहाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महानकीर्ति' से समस्त लोक में सुव्याप्त हो।
पदाब्ज को जजूँ निजात्म कीर्ति व्याप्त हो यहाँ।।89।।

ॐ ह्रीं महाकीर्तये श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महान कांति' से अपूर्व कांतिमान हो तुम्हीं।
समस्त आधि व्याधि नाश स्वस्थ कीजिये जजूँ।।90।।

ॐ ह्रीं महाकान्तये श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महावपू' असंख्य भी, प्रदेश व्याप्त लोक में।
सुकेवली समुद्सुघात से तुम्हें नमूँ यहीं।।91।।

ॐ ह्रीं महावपुषे श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महान दान' अभय दान सर्वप्राणि को दिया।
प्रभो हमें उबारिये कृपालु रक्षिये जजूँ।।92।।

ॐ ह्रीं महादानाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महान ज्ञान' से अलोक लोक जानते सदा।
सुज्ञान की कली खिले जजूँ इसीलिये तुम्हें।।93।।

ॐ ह्रीं महाज्ञानाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महान योग' नाम है स्वशुद्ध आत्मध्यान से।
अनंत धाम पा लिया नमूँ निजात्म ध्यान दो।।94।।

ॐ ह्रीं महायोगाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महागुणी' अनंत गुण समेत इन्द्रवंद्य हो।
गुणों की राशि दीजिये समस्त दोष दूर हों।।95।।

ॐ ह्रीं महागुणाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमेरु पे न्हवन करें सुरेंद्र वंद्य भक्ति से।
'महान महपती' नमूँ दरिद्र दुख दूर हो।।96।।

ॐ ह्रीं महामहपतये श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुप्राप्त महापंचकल्याणक' सुरेन्द्र वृंद से।
जिनेन्द्र एक ही कल्याण दीजिये नमूँ तुम्हें।।97।।

ॐ ह्रीं प्राप्तमहापंचकल्याणकाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्रभु' समस्त जीव के अपूर्व नाथ हो।
निवारिये समस्त मोह दुःखदायि मैं जजूँ।।98।।

ॐ ह्रीं महाप्रभवे श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महान प्रातिहार्य के अधीश' छत्र आदि से।
शतेन्द्र वंद्य आपको नमूँ अपूर्व सौख्य दो।।99।।

ॐ ह्रीं महाप्रातिहार्याधीशाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महेश्वरा' त्रिलोक के अधीश्वरा जिनेश्वरा।
सुभक्ति से नमूँ तुम्हें महान संपदा मिले।।100।।

ॐ ह्रीं महेश्वराय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–स्रग्विणी छन्द–

भो 'महाक्लेशअंकुश' परीषहजयी।
क्लेश के नाशने वीर मृत्युंजयी।।
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूं।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूं।।101।।

ॐ ह्रीं महाक्लेशांकुशाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शूर' हो कर्मक्षय दक्ष हो लोक में।
नाथ! मेरे हरो कर्म आनंद हो।।आप.।।102।।

ॐ ह्रीं शूराय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महाभूतपति' गणधराधीश हो।
वीर! रक्षा करो आप जगदीश हो।।आप.।।103।।

ॐ ह्रीं महाभूतपतये श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ही हो 'गुरू' धर्म उपदेश दो।
तीन जग में तुम्हीं श्रेष्ठ हो सौख्य दो।।आप.।।104।।

ॐ ह्रीं गुरवे श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर ही हो 'महापराक्रम' के धनी।
केवलज्ञान से सर्ववस्तू भणी।।आप.।।105।।

ॐ ह्रीं महापराक्रमाय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'अनंत' आपका अंत ना हो कभी।
वीर! दीजे अनंतों गुणों को अभी।।आप.।।106।।

ॐ ह्रीं अनन्ताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महाक्रोधरिपु' क्रोध शत्रू हना।
सर्व दोषारि नाशा सुमृत्यू हना।।आप.।।107।।

ॐ ह्रीं महाक्रोधरिपवे श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर इंद्रिय 'वशी' लोक तुम वश्य में।
आत्मवश मैं बनूँ चित्त को रोक के।।आप.।।108।।

ॐ ह्रीं वशिने श्रीमहावीरतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–दोहा–

वर्धमान सन्मति प्रभो, महावीर भगवान।
पूर्ण अर्घ्य से मैं जजूँ, बालयती गुणखान।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरशतगुणसमन्विताय श्रीमहावीरतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकराय नमः।**

(सुगंधित पुष्पों से, लवंग से या पीले चावलों से
108 बार, 27 बार या 9 बार जाप्य करें।)

जयमाला

–दोहा –

चिन्मूरति चिंतामणि, चिंतित फलदातार।
तुम गुणमणिमाला कहूँ, सुखसंपति साकार।।1।।

(चाल-श्रीपति जिनवर करुणा.....)

जय जय श्री सन्मति रत्नाकर! महावीर! वीर! अतिवीर! प्रभो!
जय जय गुणसागर वर्धमान! जय त्रिशलानंदन! धीर प्रभो!।।
जय नाथवंश अवतंस नाथ! जय काश्यपगोत्र शिखामणि हो।
जय जय सिद्धार्थतनुज फिर भी, तुम त्रिभुवन के चूड़ामणि हो।।2।।

जिस वन में ध्यान धरा तुमने, उस वन की शोभा अति न्यारी।
सब ऋतु के फूल खिलें सुन्दर, सब फूल रहीं क्यारी क्यारी।।
जहँ शीतल मंद पवन चलती, जल भरे सरोवर लहरायें।
सब जात विरोधी जन्तूगण, आपस में मिलकर हरषायें।।3।।

चहुँ ओर सुभिक्ष सुखद शांती, दुर्भिक्ष रोग का नाम नहीं।
सब ऋतु के फल फल रहे मधुर, सब जन मन हर्ष अपार सही।।
कंचन छवि देह दिपे सुंदर, दर्शन से तृप्ति नहीं होती।
सुरपति भी नेत्र हजार करे, निरखे पर तृप्ति नहीं होती।।4।।

श्री इन्द्रभूति आदिक ग्यारह, गणधर सातों ऋद्धीयुत थे।
चौदह हजार मुनि अवधिज्ञानि, आदिक सब सात भेदयुत थे।।
चंदना प्रमुख छत्तीस सहस, संयतिकायें सुरनर नुत थीं।
श्रावक इक लाख श्राविकाएँ, त्रय लाख चतुःसंघ संख्या थी।।5।।

प्रभु सात हाथ, उत्तुंग आप, मृगपति लांछन से जग जाने।
आयू बाहत्तर वर्ष कही, तुम लोकालोक सकल जाने।।
भविजन खेती को धर्मामृत, वर्षा से सिंचित कर करके।
तुम मोक्षमार्ग अक्षुण्ण किया, यति श्रावक धर्म बता करके।।6।।

मैं भी अब आप शरण आया, करुणाकर जी करुणा कीजे।
निज आत्म सुधारस पान करा, सम्यक्त्व निधी पूर्णा कीजे।।
रत्नत्रयनिधि की पूर्ती कर, अपने ही पास बुला लीजे।
''सज्ज्ञानमती'' निर्वाणश्री, साम्राज्य मुझे दिलवा दीजे।।7।।

–घत्ता –

जय जय श्रीसन्मति, मुक्ति रमापति, जय जिनगुणसंपति दाता।
तुम पूजूँ ध्याऊँ, भक्ति बढ़ाऊँ, पाऊँ निजगुण विख्याता।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

श्रीमहावीर स्वामी विधान, जो भव्य भक्ति से करते हैं।
जिनशासनपति त्रैलोक्यगुरू, की श्रद्धा चित में धरते हैं।।
वे दुषमकाल में भी रत्नत्रय, निधि पाकर सुरवैभव लभते हैं।
फिर परंपरा से ज्ञानमती, कैवल्य करें शिव लभते हैं।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

–दोहा–

वृषभदेव से वीर तक, श्री चौबीस जिनेश।
नमूँ नमूँ उनको सदा, मिटे सकल भव क्लेश।।1।।

मूल संघ आचार्य श्री, कुंदकुंद गुरुदेव।
इनके अन्वय में हुआ, नंदिसंघ दुःख छेव।।2।।

बलात्कार गण भारती, गच्छ प्रसिद्ध महान।
इसमें सूरीश्वर हुए शांतिसिंधु गुणखान।।3।।

वीरसागराचार्य थे, उनके पट्टाधीश।
आर्यिका दीक्षा दिया, किया कृतार्थ मुनीश।।4।।

शांति कुंथु अरनाथ की, जन्म भूमि जगतीर्थ।
कुरुजांगल शुभ देश में, हस्तिनागपुर तीर्थ।।5।।

पच्चीस सौ चालिस कहा, वीर अब्द शुभ मान।
माघ शुक्ल पंचमि तिथी, रचना पूरण जान।।6।।

जो भव्य नित पूजा करें, पढ़ें सुनें एकाग्र।
इंद्र चक्रि सुख भोग के, वे पहुँचे लोकाग्र।।7।।

यावत् जग में मेरु हैं, महावीर जिनधर्म।
तावत् गणिनी ज्ञानमती, कृति देवे शिववर्त्म।।8।।

।इति श्रीमहावीरस्वामिविधानं संपूर्णम्।
।।इति शं भूयात्।।

पूजा नं. २

महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर तीर्थ पूजा

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

स्थापना (चौबोल छन्द)

महावीर प्रभु जहां जन्म ले, सचमुच बने अजन्मा हैं।
जिस धरती पर त्रिशला मां ने, एक मात्र सुत जनमा है।।
उस बिहार की कुण्डलपुर, नगरी को वन्दन करना है।
वन्दन कर उस तीरथ का, हर कण चन्दन ही समझना है।।1।।

दोहा

आह्वानन स्थापना, सन्निधिकरण प्रधान।
अष्टद्रव्य का थाल ले, पूजा करूँ महान।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (शंभु छंद)

जिनवर ने कर्मों की ज्वाला, समता के जल से शांत किया।
भक्तों ने ले जल की धारा, जिनवर का पद प्रक्षाल किया।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय जन्मजरामृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जहां प्रभु सन्मति को लखते ही, मुनियों की शंका दूर हुई।
जहां की चंदनसम माटी से, भव की बाधा निर्मूल हुई।।

महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुंडलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने अक्षय पद पाने का, जिस धरती पर संकल्प लिया।
अक्षत के पुंज चढ़ा मैंने, उन प्रभु अर्चन का यत्न किया।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

महलों का सुख वैभव तज कर, जहाँ वीर बने वैरागी थे।
कर कामदेव पर विजय चले, शिवपथ के वे अनुरागी थे।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

देवों द्वारा लाया भोजन, महावीर सदा ही खाते थे।
क्षुधरोग विनाशन हेतु तथापी, वे निज काय तपाते थे।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मतिश्रुत व अवधि त्रय ज्ञान सहित, तो वीर प्रभू थे जन्म से ही।
मनपर्ययज्ञान हुआ प्रगटित, प्रभुवर के दीक्षा लेते ही।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूं शत वन्दन मैं।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शुक्ल ध्यान की अग्नी में, कर्मों की धूप जलाते थे।
उनकी सौरभ पाने हेतु, प्रभु पास भक्तगण आते थे।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर प्रभु ने तप करके, कैवल्य महाफल पाया है।
भक्तों ने इच्छा पूर्ति हेतु, फल प्रभु चरणों में चढ़ाया है।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज अष्टकर्म के नाशक प्रभु की, अष्टद्रव्य से पूजन है।
''चन्दनामती'' शिवपद हेतू, सन्मति से मेरा निवेदन है।।
महावीर प्रभु की जन्मभूमि, कुण्डलपुर तीर्थ का अर्चन है।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, इस हेतु करूँ शत वन्दन मैं।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शेर छन्द

महावीर प्रभु की भक्ति की रसधार जो बही।
उससे मनुज व देवों में सुमति प्रगट हुई।।
निज शांति व शीतल सहज अनुभूति मैं करूँ।
जिनवर का ज्ञान अंश मैं भी निज हृदय भरूँ।।10।।

शांतये शांतिधारा.....

निज ज्ञान के पुष्पों को बिखेरा जो प्रभू ने।
उसकी सुगन्ध ग्रहण कर ली बहुत जनों ने।।

भगवान मुझे यदि तेरे, गुण पुष्प मिल सकें।
तो मेरा मोक्षमार्ग बन्द, स्वयं खुल सके।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः.....

कुण्डलपुरी तीर्थ के अर्घ्य (शंभु छन्द)

कुण्डलपुर में सिद्धार्थ नृपति, निज राज्य का संचालन करते।
प्रियकारिणि त्रिशला रानी के संग, पुण्य का संपादन करते।।
आषाढ़ सुदी छठ तिथि में नंद्यावर्त, महल का भाग्य जगा।
जहाँ गर्भ कल्याणक हुआ वीर का, मैं पूजूँ वह धाम महा।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्रगर्भकल्याणकपवित्रकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित चैत्र त्रयोदशि को महावीर, प्रभू जन्मे कुण्डलपुर में।
स्वर्गों में बाजे बाज उठे, सुरपति के स्वयं ही मुकुट नमे।।
सुरशैल शिखर पर जन्मोत्सव कर, कुण्डलपुर प्रभु को लाये।
उस जन्मभूमि का अर्चन कर, हम सब मन में अति हरषाये।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्रजन्मकल्याणकपवित्रकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ जातिस्मरण वीर प्रभु को, दीक्षा का भाव हृदय जागा।
दीक्षा लेते ही प्रगट हुए, चउ ज्ञान मोहप्रभु का भागा।।
वैराग्य भूमि कुण्डलपुर को, मैं जजूँ मुझे वैराग्य मिले।
नृप कूल ने प्रथम आहार दिया, मैं नमूँ पुण्य साम्राज्य मिले।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्रदीक्षाकल्याणकपवित्रकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुण्डलपुर निकट जृंभिका में ऋजुकूला तट पर ज्ञान हुआ।
उसके ऊपर गगनांगण में, प्रभु समवसरण निर्माण हुआ।।
मैं केवलज्ञान कल्याणक की, भूमी का नित्य यजन कर लूँ।
सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हेतु, सन्मति प्रभु को वन्दन कर लूँ।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजिनेन्द्रकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रजृंभिका-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

जिस नगरी की रज महावीर के, कल्याणक से पावन है।
जहाँ इन्द्र इन्द्राणी की भक्ती का, सदा महकता सावन है।।
उस कुण्डलपुर में नंद्यावर्त, महल का सुन्दर परिसर है।
पूर्णार्घ्य चढ़ाकर नमूँ वहाँ, महावीर की प्रतिमा मनहर है।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्र गर्भजन्मदीक्षा-आदिकल्याणकपवित्रकुण्डलपुर-तीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्यमंत्र-ॐ ह्रीं कुण्डलपुरजन्मभूमिपवित्रीकृतश्रीमहावीरतीर्थंकराय नमः।

जयमाला

तर्ज-जरा सामने तो आओ.....

जहाँ जन्मे वीर वर्धमान जी, जहाँ खेले कभी भगवान जी।
उस कुण्डलपुरी की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।टेक.।।
कुण्डलपुर में राजा सर्वारथ, के सुत सिद्धार्थ हुए।
जो वैशाली के नृप चेटक, की पुत्री के नाथ हुए।।
रानी त्रिशला की खुशियां अपार थी, सुन्दरता की वे सरताज थीं।
उस कुण्डलपुरी की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।1।।
राजहंस से मानसरोवर, जैसे शोभा पाता है।
वैसे ही प्रभु जन्म से जन्म, नगर पावन बन जाता है।।
जय जय होती है प्रभु पितु मात की, इन्द्र गाता है महिमा महान भी।
उस कुण्डलपुरी की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।2।।
प्रान्त बिहार में नालंदा के, निकट बसा कुण्डलपुर है।
छब्बिस सौंवे जन्मोत्सव में, गूंजा ज्ञानमती स्वर है।।
तभी आई घड़ी उत्थान की, होती दर्शन से जनता निहाल भी।
उस कुण्डलपुर की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।3।।
प्रभु तेरी उस जन्मभूमि का , कण-कण पावन लगता है।
छोटा सा भी उपवन तेरा, नन्दन वन सम लगता है।।

अर्घ्य का लाके इक लघु थाल जी, करूँ अर्पण झुका निज भाल भी।
उस कुण्डलपुरी की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।4।।
इस तीरथ के अर्चन से, आत्मा तीरथ बन सकती है।
इसकी कीरत के कीर्तन से, कीर्ति स्वयं की बढ़ती है।।
करूँ ''चन्दनामती'' प्रभु आरती, भरूँ मन में सुगुण की भारती।
उस कुण्डलपुरी की करूँ अर्चना, जय हो सिद्धार्थ त्रिशला के लाल की।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीमहावीरजन्मभूमिकुण्डलपुरतीर्थक्षेत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

शान्तये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीता छन्द–

जो भव्य प्राणी वीरप्रभु की, जन्मभूमि को नमें।
महावीर प्रभु की चरणरज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला वे, चन्दनामति आएंगे।।1।।

इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः।

भगवान श्री महावीर स्वामी की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–मन डोले, मेरा.....

जय वीर प्रभो, महावीर प्रभो, की मंगल दीप प्रजाल के
मैं आज उतारूं आरतिया।।टेक.।।

सुदी छट्ठ आषाढ़ प्रभूजी, त्रिशला के उर आए।
पन्द्रह महिने तक कुबेर ने, बहुत रत्न बरसाये।।प्रभू जी.।।
कुण्डलपुर की, जनता हरषी, प्रभु गर्भागम कल्याण पे,
मैं आज उतारूं आरतिया।।1।।

धन्य हुई कुण्डलपुर नगरी, जन्म जहां प्रभु लीना।
चैत्र सुदी तेरस के दिन, वहां इन्द्र महोत्सव कीना।।प्रभू जी.।।
काश्यप कुल के, भूषण तुम थे, बस एकमात्र अवतार थे,
मैं आज उतारूं आरतिया।।2।।

यौवन में दीक्षा धारण कर, राजपाट सब त्यागा।
मगशिर असित मनोहर दशमी, मोह अंधेरा भागा।।प्रभू जी.।।
बन बालयती, त्रैलोक्यपती, चल दिए मुक्ति के द्वार पे,
मैं आज उतारूं आरतिया।।3।।

शुक्ल दशमि वैशाख में तुमको, केवलज्ञान हुआ था।
गौतम गणधर ने आ तुमको, गुरु स्वीकार किया था।।प्रभू जी.।।
तव दिव्यध्वनी, सब जग ने सुनी, तुमको माना भगवान है,
मैं आज उतारूं आरतिया।।4।।

पावापुरि सरवर में तुमने, योग निरोध किया था।
कार्तिक कृष्ण अमावस के दिन, मोक्ष प्रवेश किया था।।प्रभू जी.।।
निर्वाण हुआ, कल्याण हुआ, दीपोत्सव हुआ संसार में,
मैं आज उतारूं आरतिया।।5।।

वर्धमान सन्मति अतिवीरा, मुझको ऐसा वर दो ।
कहे 'चंदनामती' हृदय में, ज्ञान की ज्योति भर दो। प्रभू जी.।।
अतिशयकारी, मंगलकारी, ये कल्पवृक्ष भगवान हैं,
मैं आज उतारूं आरतिया।।6।।

कुण्डलपुर तीर्थ की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–हे वीर तुम्हारे द्वारे पर.....

त्रिशला के ललना महावीर की, जन्मभूमि अति न्यारी है।
आरति कर लो कुण्डलपुर की, तीरथ अर्चन सुखकारी है।।टेक.।।

है प्रांत बिहार में कुण्डलपुर, जहाँ वीर प्रभू ने जन्म लिया।
राजा सिद्धार्थ और त्रिशला, माता का आंगन धन्य किया।।
उस नंद्यावर्त महल की सुन्दरता ग्रन्थों में भारी है।।आरति....।।1।।

पलने में झूलते वीर दर्श से, मुनि की शंका दूर हुई।
शैशव में संगम सुर ने परीक्षा, ली प्रभु वीर की विजय हुई।।
सन्मति एवं महावीर नाम, तब से ही पड़ा मनहारी है।।आरति....।।2।।

हुए तीन कल्याणक इस भू पर, जृम्भिका के तट पर ज्ञान हुआ।
प्रभु मोक्ष गए पावापुरि से, इन्द्रों ने दीपावली किया।।
उन पाँच नामधारी जिन की, महिमा जग भर में न्यारी है।।आरति....3।।

कुछ कालदोषवश जन्मभूमि का, रूप पुराना नष्ट हुआ।
पर छब्बिस सौंवे जन्मोत्सव में, ज्ञानमती स्वर गूंज उठा।।
इतिहास पुनः साकार हुआ, उत्थान हुआ अतिभारी है।।आरति....4।।

जिस नगरी की रज महावीर के, कल्याणक से पावन है।
जहाँ इन्द्र-इन्द्राणी की भक्ती का, सदा महकता सावन है।।
वहाँ तीर्थ विकास हुआ विस्तृत, तीरथ की छवि अति न्यारी है।।आरति....5।।

प्रभुवर तेरी इस जन्मभूमि का, कण-कण पावन लगता है।
है परिसर नंद्यावर्त महल, जो नंदनवन सम लगता है।।
इस विकसित तीर्थ के हर जिनमंदिर, का दर्शन भवहारी है।।आरति....6।।

जिनशासन के सूरज तीर्थंकर, महावीर को नमन करूं।
उन तीर्थ प्रणेत्री माता को भी, भक्तिभाव से मैं वंदूं।।
''चंदनामती'' यह तीर्थ अर्चना, दे शिवतिय सुखकारी है।।आरति....7।।

भगवान महावीर चालीसा

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

दोहा

सिद्धिप्रिया के नाथ हैं, महावीर भगवान।
सिद्धारथ सुत वीर को, मेरा कोटि प्रणाम।।1।।

वर्धमान अतिवीर प्रभु, सन्मति हैं सुखकार।
पाँच नाम युत वीर को, वन्दन बारम्बार।।2।।

चालीसा महावीर का, पढ़ो भव्य मन लाय।
रोग शोक संकट टलें, सुख सम्पति मिल जाय।।3।।

चौपाई

जय जय श्री महावीर हितंकर। जय हो चौबिसवें तीर्थंकर।।1।।
जय प्रभु तुम जग में क्षेमंकर। जय जय नाथ तुम्हीं शिवशंकर ।।2।।
जन्म लिया प्रभु कुण्डलपुर में। चैत्र सुदी तेरस शुभ तिथि में।।3।।
त्रिशला माता धन्य हो गईं। अपने सुत में मग्न हो गईं।।4।।
राजा सिद्धारथ हरषाये। पुत्र जन्म पर दान बंटाये।।5।।
स्वर्गों में भी खुशियाँ छाईं। इन्द्रों की टोली वहाँ आई।।6।।
नंद्यावर्त महल में जाकर। सिद्धारथ से आज्ञा पाकर।।7।।
पहुँची शची प्रसूती गृह में। माता की त्रय प्रदक्षिणा दे।।8।।
त्रिशला माँ का वन्दन करके। उनको निद्रा सम्मुख करके।।9।।
मायामय बालक को सुलाया। गोद में जिनबालक को उठाया।।10।।
तत्क्षण स्त्रीलिंग विनाशा। शिवपद की मन में अभिलाषा।।11।।
जिन शिशु को बाहर लाकर के। दिया इन्द्र के करकमलों में।।12।।
इन्द्र प्रभू को ले अति हरषा। हर्षाश्रू की हो गई वर्षा।।13।।
दो नेत्रों से देख न पाया। नेत्र सहस्र तब उसने बनाया।।14।।

निरखा अंग अंग जिनवर का। फिर भी उसका मन नहिं भरता।।15।।
मेरु सुदर्शन पर ले जाकर। किया जन्म अभिषेक प्रभू पर।।16।।
उस जन्मोत्सव का क्या कहना। तीन लोक में उसकी महिमा।।17।।
इन्द्र ने नामकरण किया प्रभु का। वीर व वर्धमान पद उनका।।18।।
जन्म न्हवन के बाद शची ने। प्रभु को किया सुसज्जित उसने।।19।।
फिर कुण्डलपुर नगरी आकर। मात-पिता को सौंपा बालक।।20।।
वहाँ पुनः जन्मोत्सव करके। नृत्य किया था कुण्डलपुर में।।21।।
पलना खूब झुलाया प्रभु का। नंद्यावर्त महल परिसर था।।22।।
एक बार दो मुनिवर आये। जिनशिशु को लख अति हर्षाये।।23।।
दूर हुई उनकी मनशंका। ''सन्मति'' नाम उन्होंने रक्खा।।24।।
बालपने में क्रीड़ा करते। मात-पिता के मन को हरते।।25।।
संगमदेव एक दिन आया। उसने सर्प का वेष बनाया।।26।।
वर्धमान तब खेल रहे थे। देवबालकों के संग वन में।।27।।
उनके बल की हुई परीक्षा। सर्प देव की थी यह इच्छा।।28।।
चढ़े सर्प के फण पर वे तो। मानो माँ की गोदी में हों।।29।।
सर्प ने देवरूप प्रगटाया। ''महावीर'' कह शीश झुकाया।।30।।
बालपने से यौवन पाया। लेकिन ब्याह नहीं रचवाया।।31।।
जातिस्मरण हुआ जब उनको। दीक्षा लेने चल दिये वन को।।32।।
बारह वर्ष कठिन तप करके। केवलज्ञान प्रगट हुआ उनके।।33।।
प्रथम देशना विपुलाचल पर। प्रगटी शिष्य मिले जब गणधर।।34।।
तीस वर्ष तक समवसरण में। दिव्य देशना दी जिनवर ने।।35।।
पावापुर से मोक्ष पधारे। तीर्थंकर महावीर हमारे।।36।।
सबने दीपावली मनाई। तब से ही दीवाली आई।।37।।
चला वीर संवत्सर जग में। सर्वाधिक प्राचीन सुखद है।।38।।

कार्तिक शुक्ला एकम तिथि से। प्रारंभ होता नया वर्ष है।।39।।
महावीर की जय सब बोलो। आत्मा के सब कल्मष धो लो।।40।।

शंभु छन्द

प्रभु महावीर का चालीसा, जो चालिस दिन तक पढ़ते हैं।
उनकी स्मृति में दीवाली के, दिन दीपोत्सव करते हैं।।
विघ्नों का शीघ्र विलय होकर, उनको मनवाञ्छित फल मिलता।
लौकिक वैभव के साथ साथ, आध्यात्मिक सौख्यकमल खिलता।।1।।

पच्चिस सौ उनतिस वीर संवत्, शुभ ज्येष्ठ कृष्ण मावस तिथि में।
रच दिया ज्ञानमति गणिनी की, शिष्या "चन्दनामती" मैंने।।
पावापुर में जलमंदिर का, दर्शन कर मन अति हर्षित है।
प्रभु महावीर के चरणों में, मेरी यह कृती समर्पित है।।2।।

रत्नत्रय की हो वृद्धि प्रभो, बोधी समाधि की प्राप्ती हो।
नश्वर इस मानव तन द्वारा, अविनश्वर पद की प्राप्ती हो।।
उससे पहले प्रभु आर्त रौद्र, ध्यानों की सहज समाप्ती हो।
मैं धर्मध्यान में रम जाऊँ, तब ही सच्ची सुख शांती हो।।3।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

नाम तिहारा तारनहारा कब तेरा दर्शन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।। टेक.।।

जाने कितनी माताओं ने, कितने सुत जन्में हैं।
पर इस वसुधा पर तेरे सम, कोई नहीं बने हैं।।
पूर्व दिशा में सूर्य देव सम, सदा तेरा सुमिरन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।1।।

पृथ्वी के सुन्दर परमाणू, सब तुझमें ही समा गए।
केवल उतने ही अणु मिलकर, तेरी रचना बना गए।।
इसीलिए तुझ सम सुन्दर नहिं, कोई नर सुन्दर होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।2।।

मन में तव सुमिरन करने से, पाप सभी नश जाते हैं।
यदि प्रत्यक्ष करें तव दर्शन, मनवांछित फल पाते हैं।।
आज "चंदनामती" प्रभू का, अनुपम गुण कीर्तन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।3।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–बजे कुण्डलपुर में.....

वीर भज ले तू महावीर भज ले,
काम सारे बन जायेंगे, वीर भज ले।। टेक.।।

क्यों भूला तू महावीर को-2
महावीर नैय्या तिरवायेंगे, वीर भज ले.....।।1।।

क्यों भूला तू मंदिर को-2
जीने की कला बतलायेंगे, वीर भज ले.....।।2।।

क्यों भूला तू मंदिर को-2
मंदिर ही तुझे तिरवायेंगे, वीर भज ले.....।।3।।

क्यों भूला तू सच्चे देव को-2
वही तो देव बनवायेंगे, वीर भज ले.....।।4।।

क्यों भूला तू शास्त्रों को-2
वे ही तो ज्ञान सिखलायेंगे, वीर भज ले.....।।5।।

क्यों भूला तू गुरुओं को-2
वे ही तो पथ दर्शायेंगे, वीर भज ले.....।।6।।

क्यों भूला तू मात-पिता को-2
वे ही तो तेरा हित चाहेंगे, वीर भज ले.....।।7।।

क्यों भूला तू भाई-बहन को-2
वे ही तो प्रेम सिखलायेंगे, वीर भज ले.....।।8।।

मत भूल तू धरम करम को-2
ये ही तो ज्ञान सिखलायेंगे, वीर भज ले.....।।9।।

ले ले ''चंदना'' तू वीर का शरणा-2
ये ही तो मोक्ष दिलवायेंगे, वीर भज ले.....।।10।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–मेरे देश की धरती.....

कुण्डलपुर धरती वीरप्रभू के जन्म से धन्य हुई है।
कुण्डलपुर धरती.....ओ.....।। टेक.।।

छब्बिस सौ वर्षों पूर्व जहाँ, धनपति ने रतन बरसाये थे।
रानी त्रिशला के सपने सुन, सिद्धार्थराज हरषाये थे।।
तीर्थंकर सुत को पाकर त्रिशला माता धन्य हुई है।
कुण्डलपुर धरती.....ओ.....।।1।।

पलने में देख वीर प्रभु को, मुनियों की शंका दूर हुई।
इक देव सर्प बनकर आया, उसकी शक्ती भी चूर हुई।।
कुण्डलपुर की ये सत्य कथाएं जिन आगम में कही हैं।
कुण्डलपुर धरती.....ओ.....।।2।।

गणिनी माताश्री ज्ञानमती के, चरण पड़े कुण्डलपुर में।
अतएव वहाँ पर नंद्यावर्त, महल मंदिर भी शीघ्र बने।।
महावीर जन्मभूमी विकास की घड़ियां धन्य हुई हैं।
कुण्डलपुर धरती.....ओ.....।।3।।

उस जन्मभूमि के दर्शन कर, तुम भी निज शंका दूर करो।
महावीर प्रभू के सन्मुख अपनी, इच्छाएँ परिपूर्ण करो।।
''चन्दनामती'' उसके दर्शन पाकर के धन्य हुई है।
कुण्डलपुर धरती.....ओ.....।।4।।